आरती कैसे करें ? (लघुग्रंथ)

संक्षिप्त अनुक्रमणिका

- भूमिका ५
- लघुग्रंथविषयक साधकोंको प्राप्त ज्ञान ७
- आरती करनेका क्या महत्त्व है ? ९
- प्रातः एवं सायंकालमें आरती क्यों करें ? १२
- आरती करनेका संपूर्ण कृत्य १४
- आरतीके पूर्व शंख क्यों एवं कैसे बजाएं ? १९
- आरती उचित उच्चारणसहित क्यों गाएं ? २९
- आरतीके समय ताली एवं वाद्य मंद स्वरमें क्यों बजाएं ? ३२
- देवताकी आरती करनेकी उचित पद्धति क्या है ? ३८
- 'त्वमेव माता, पिता त्वमेव' प्रार्थना क्यों करें ? ४३
- आरती ग्रहण करनेकी उचित पद्धति क्या है ? ४६
- आरतीके उपरांत परिक्रमा क्यों करें ? ४९
- मंत्रपुष्पांजलि-अर्पणका अध्यात्मशास्त्र क्या है ? ५४
- आरतीके उपरांत देवताओंका जयघोष क्यों करें ? ५७

भूमिका

उपासकके हृदयमें स्थित भक्तिदीपको तेजोमय बनानेका एवं देवतासे कृपाशीर्वाद ग्रहण करनेका सुलभ शुभावसर है 'आरती' । संतोंकी संकल्पशक्तिद्वारा सिद्ध आरतियोंको गानेसे उपर्युक्त उद्देश्य निःसंशय सफल होते हैं; परंतु यह तब संभव है जब आरतियां हृदयसे, अर्थात आर्त्तभावसे, उत्कंठासे एवं अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोणसे उचित पद्धतिसे गाई जाएं ।

कोई कृत्य हमसे आर्त्ततासे अर्थात अंतःकरण-पूर्वक तब होता है, जब उसका महत्त्व हमारे मनपर अंकित हो । उस विषयके आधारभूत शास्त्र अथवा सिद्धांतको समझनेपर उसका महत्त्व शीघ्र स्पष्ट होता है । इसी उद्देश्यसे आरतीके अंतर्गत विविध कृत्योंका आधारभूत अध्यात्मशास्त्र इस लघुग्रंथमें दिया गया है । उपासनामें कोई भी कृत्य अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाकर उचित पद्धतिसे करना अत्यावश्यक है; क्योंकि ऐसे कृत्यका ही परिपूर्ण फल मिलता है । देवताकी आरती उनके अनाहतचक्रसे अर्थात हृदयस्थलसे आज्ञाचक्रतक उतारनी चाहिए, आरतीके समय ताली धीमेसे बजानी चाहिए एवं आरतीके उपरांत देवताकी परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए । ऐसे अनेक कृत्योंकी हमें जानकारी नहीं होती अथवा हो, तो भी कृत्य उचित पद्धतिसे नहीं होते । इस लघुग्रंथसे हमें यह ज्ञात होगा कि अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाकर प्रत्येक कृत्यको उचित पद्धतिसे कैसे करना चाहिए ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रंथमें बताए गए शास्त्रको समझकर आरती करनेसे प्रत्येक व्यक्तिकी अधिकाधिक भावजागृति हो । - संकलनकर्ता